

अधस्त्वक वि. (तत्.) त्वचा के नीचे का।
subcutaneous

अधातु स्त्री. (तत्.) वह पदार्थ जो धातु न हो।

अधात्विक वि. (तत्.) 1. अधातु, जो धातु न हो
2. धातु से भिन्न पदार्थ से बना हुआ non-metallic 3. जिसमें धातु के गुण न हों।

अधात्वीय वि. (तत्.) जो धातु से न बना हो, धातु से भिन्न पदार्थ से बना, अधात्विक।

अधारी स्त्री. (तत्.) आधार, टेक, सहारा।

अधार्मिक वि. (तत्.) 1. जो धार्मिक न हो, अधर्मी, धर्मशून्य 2. पापी, दुराचारी 3. धर्मतर, जो धर्म से संबद्ध न हो।

अधावट वि. (तत्.) अधोट, वह दूध जो औट-औट कर आधा रह गया हो।

अधि उप. (तत्.) एक उपसर्ग जो प्रायः निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होता है 1. ऊपर, ऊँचा, (जैसे- अधिराज) 2. मुख्य, प्रधान (जैसे अधिदेवता) 3. ज्यादा (जैसे अधिमास)।

अधिक वि. (तत्.) 1. बहुत, ज्यादा 2. अतिरिक्त, शेष, बचा हुआ। पुं. एक अलंकार जिसमें आश्रयी या आधेय का वर्णन आश्रय या आधार की तुलना में अधिक बढ़ा चढ़ा कर किया जाता है जैसे- तीनों लोकों को अपने भीतर समाए विष्णु शेषनाग पर आराम से सो गए।

अधिककोण पुं. (तत्.) वह कोण जो समकोण (90) से बड़ा हो।

अधिककोण त्रिभुज पुं. (तत्.) गणित/ज्यामि. वह त्रिभुज जिसमें एक कोण अधिक कोण हो।

अधिकतः क्रि.वि. (तत्.) अधिकतर, विशेषकर।

अधिकतम वि. (तत्.) परिमाण, माप, संख्या, आदि में सबसे अधिक, अधिक की अतिशय कोटि।

अधिकतया क्रि.वि. (तत्.) अधिक रूप से।

अधिकतर वि. (तत्.) तुलनात्मक दृष्टि से अधिक से आगे (की कोटि) क्रि.वि. ज्यादातर, बहुत करके, प्रायः।

अधिकता स्त्री. (तत्.) बहुतायत, वृद्धि, ज्यादा, होने की स्थिति, आधिक्य, अतिशयता।

अधिक तिथि स्त्री. (तत्.) खगोल. वह तिथि जो किसी दिन सूर्योदय के समय हो और अगले दिन सूर्योदय के कुछ समय बाद समाप्त हो।

अधिकत्व पुं. (तत्.) किसी भाव की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यकता से अधिक शब्द या शब्दों का उपयोग जैसे 'आज बिराज, बादल मेघ (एक काव्यदोष) ।

अधिक-मास पुं. (तत्.) अधिमास, मलमास, लौंड का महीना, हर तीसरे वर्ष पड़ने वाला चांद्र मास, पुरुषोत्तम मास, बारह महीनों के अतिरिक्त (तेरहवाँ महीना हो जाता है)।

अधिकर स्त्री. (तत्.) अतिरिक्त लगाया गया कर, जैसे बहुत अधिक आय पर कर 1. सामान्य कर 2. अतिकर।

अधिकरण पुं. (तत्.) 1. अधिकरण कारक 2. लिंग, वचन, पुरुष, कारक में अन्विति 3. किसी विशिष्ट विवाद-विषय पर विचार-विमर्श के लिए स्थापित अधिष्ठान, न्यायालय 4. संबंध, संदर्भ के 5. आधार (क्रिया का) 6. अवस्थिति 7. अध्याय।

अधिकरण कारक वि. (तत्.) कर्ता, क्रिया या कर्म के स्थानसूचक या समयसूचक आधार को व्यक्त करने वाला संज्ञा पदबंध रूप, सप्तमी विभक्ति का रूप जैसे घर में, मेज पर।

अधिकरण सिद्धांत पुं. (तत्.) न्याय दर्शन का वह सिद्धांत जिसके सिद्ध होने से कोई अन्य सिद्धांत या अर्थ भी स्वयं सिद्ध हो जाए।

अधिकरणिक पुं. (तत्.) न्यायकर्ता, निर्णय करने वाला, न्यायाधीश।

अधिकरणी वि. (तत्.) 1. अध्यक्ष 2. निरीक्षण करनेवाला 3. स्वामी।

अधिकर्म पुं. (तत्.) 1. देखरेख, निरीक्षण 2. श्रेष्ठ कर्म।

अधिकर्मा पुं. (तत्.) 1. निरीक्षक 2. अध्यक्ष।